मधुऋतु

जयशंकर प्रसाद

श्री जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जमवरी 1889 **को** काशी में हुआ था। प्रतिभाशाली रचनाकार प्रसाद छाया वाद के चार स्तंभों में एक है। छायावाद आधुनिक हिंदी कविता की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। प्रेम, सौंदर्यवर्णन, मान वीकरण, लाक्षणिकता, चित्रमयता, काल्पनिकता, कोमलकांत पदावली, आदि छायावादी कविता की खास विशेषता है। प्रसाद की मधुऋतु में छायावाद की सारी विशेषताएँ समाहित है।

छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता....

कवितांश पढ़कर उत्तर लिखें:

(1) " अरे आ गई.....सूखे तिनको "।

(1) समानार्थी शब्द कविता से चुनकर लिखें।

मौसम	- ऋतु	घोंसला	- नीड़
वसंतकाल	- मधुऋतु	भूमि/धरती	- वसुधा
झोंपडी	- कुटिया	जंगल	- झारखंड
सहेली	- साथिन	शिशिर	- पतझड
घास का टुकडा	– तिनका	स्थिर	- चिर
रास्ता भूलकर/मार्गच्युत	- भूली सी	आकाश	- नभ
पत्तों का झड़ना	- पतझड		

(2) कौन आ गई है? कैसे?

वसंतकाल (मधुऋतु) अपना पथ भूलकर आ गई है।

(3) मधुऋतु कौन है?

कवि की प्रेमिका है।

(4) मधुऋतु रूपी प्रेमिका क्यों अपनी रास्ता भूलकर आई है?

प्रेमिका के मन में अपने प्रेमी के प्रति जो तीव्र अनुराग है, वह अपने प्रणय को प्रकट करना नहीं चाहती है। अपने प्रणय को दिल में ही छिपाना चाहती है। इसलिए मधुऋतु रूपी प्रेमिका अपना पथ भूलकर एक व्यथा साथिन के रूप में आई है।

(5) अपने व्यथा साथिन केलिए क्या रचा देना चाहता है? कहाँ?

अपने व्यथा साथिन केलिए धरती और आकाश के बीच में एक छोटी कुटिया रचा देना चाहता है।

(6) मधुऋतु कितने दिन केलिए आ गई है?

मधुऋतु दो दिन केलिए आ गई है।

(7) प्रेम का नीड़ कहाँ स्थित है?

प्रेम का नीड़ आकाश और धरती के बीच, सबसे अलग होकर स्थित है। अर्थात प्रेमी-प्रेमिका के मन में तीव्र अनुराग छा जाने पर, वे न धरती में रहते है, न आस्मान में। इन दोनों के बीच में एक प्रकार की उन्माद अवस्था में फैली जाती है। वसंतकालीन वातावरण प्रेमियों केलिए सबसे प्रिय है।

(8) 'सूखे तिनको' से क्या तात्पर्य है?

'सूखे तिनके' का शाब्दिक अर्थ है 'सूखे घास का टुकडा'। वसंत ऋतु के हरियाली में सूखे पत्तों को कोई स्थान नहीं है। 'सूखे तिनके' शब्द यहाँ प्रेम विहीन लोगों को सूचित करते है। सूखे घास का टुकडा जैसे प्रेम-विहीन लोगों को जंगल के स्थाई पतझड़ में भागना है।

(9) जंगल के पतझड़ में किसको भागना है?

जो सूखे और फ़ालतू है, उनको जंगल के स्थाई पतझड़ में भागना है।

DO NOT COPY

(10) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में अग्रणी है। कामायनी, झरना, लहर आदि उनकी श्रेष्ठ काव्य रचनाएँ है। 'मधुऋतु' छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता है। इस कविता में वसंत ऋतु को कवि अपने प्रेमिका के रूप में खींचा है।

कवि कहते हैं कि कवि के शून्य हृदय में पथ भूलकर आनेवाली 'वसंतकाल' के समान अचानक प्रेमिका आ गई। इस व्यथा साथिन केलिए कवि अपने मन में एक छोटी-सी कुटिया बना देना चाहता है।

प्रेम का वह नीड़ धरती और आकाश के बीच सबसे अलग होकर स्थित है। जो सूखे और फालतू अर्थात प्रणय विहीन व्यक्तियाँ को जंगल के स्थिर पतझड़ में भागना है।

प्रस्तुत कवितांश में वसंतकालीन प्रकृति का चित्रण हुआ है। प्रेम एवं प्रकृति का अटूट संबंध है।

(2) "आशा से ..... रँगेगा दिन को"।

(1) समानार्थी शब्द कविता से चुनकर लिखें।

आग्रह	- आशा	रोमांच भरी	- सिहर भरी
कली	- अंकुर	मलयसमीर	- मलयानिल
लहराना/हिलना	- झूलना	बुरा लगेगा	- खलेगा
पल्लव	- किसलय	किसलय	- पल्लव
संसार	- भव	मन	- मानस
लाल	- जवा/अरुण	कमल	- नलिन
फूल	- कुसुम	आँख	- नयन
होंठ	- अधर	पूरब	- प्राची
प्रभात	- उषा	**रंगीन होना**	**- राग रंगना**

(2) प्रेमी के मन में कब आशा के नए अंकुर झूलेंगे?

वसंत काल के आगमन पर।

(3) आशा के नए-नए अंकुर झूलने से क्या हो सकती है?

आशा के नए-नए अंकुर झूलने से पल्लव पुलकित हो जाएँगे।

(4) मलयानिल की लहरें कैसे आएँगी?

मलयानिल की लहरें रोमांचित होकर काँपते हुए आएगी।

(5) मलयानिल की लहरें किसलिए आई?

मलयानिल की लहरें मन के नयनरूपी कमल को चुंबन देकर जगाने केलिए आई।

(6) 'उषा' शब्द किन-किन की ओर इशारा करता है?

यहाँ 'उषा' शब्द का प्रयोग लाल कुसुम और प्रेमिका की ओर संकेत करता है। कवि के छोटे संसार में लाल फूल की तरह अर्थात जीवन में सौंदर्य की लालिमा फैलाकर पूरब से उषा रूपी प्रेमिका आएगी।

(7) उषा कहाँ खिलेगी? कैसे?

उषा लाल कुसुम की तरह कवि के जीवन में सौंदर्य फैलाते हुए कवि के छोटी संसार की पूरब से खिलेगी।

(8) दिन कैसे रंगीन बन जाता है?

उषा के, हँसी भरी लाल होंठों का रंग दिन को रंगीन बना देगा।

(9) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

HSSLiVE.IN

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में अग्रणी है। कामायनी, झरना, लहर आदि उनकी श्रेष्ठ काव्य रचनाएँ है। 'मधुऋतु' छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता है। इस कविता में वसंत ऋतु को कवि अपने प्रेमिका के रूप में खींचा है।

कवि कहते हैं कि, वसंत की प्रेममयी वातावरण में आशा के नए-नए अंकुर फूटेगे और प्रेमी, पल्लव की तरह पुलकित हो जाएँगे। प्रेम एक उन्माद अवस्था है, और प्रेम का मधुर मोहक संसार किसी को बुरा नहीं लगेगा। मलयानिल की लहरें काँपते हुए आएँगी और कवि के मन के नयन रूपी कमलों को चुंबन करके जगाएँगी। कवि के छोटे संसार में पूरब दिशा से लाल कुसुम की तरह उषा खिलेगी। उषा की लाल होंठों से निकलने वाली लालिमा से दिन रंगीन बनेगा।

(3) " अंधकार की जलधि .....दो इनको "।

(1) समानार्थी शब्द कविता से ढूँढकर लिखे।

समुद्र/सागर	-	जलधि	पारकर	-	लाँघकर
चंद्र	-	शशि	रश्मि	-	किरण
रात	-	निशि	हिमकण	-	तुहिन
सृष्टि	-	सृजन	अँधेरा	-	अँधकार
ओस की बूँद	-	तुहिन			

(2) अँधकार के सागर को पार कर कौन आता है?

रात में अँधकार रूपी सागर को पार करके चंद्र की किरणें आती है।

(3) चंद्र किरणें कब आएँगी? कैसे?

रात में अँधकार रूपी सागर को पार कर आएँगी।

(4) हिमकणों को कौन छिड़कता है? कब?

रात के अंधकार में अंतरीक्ष से प्रकृति के कण-कण में ओस की बूँदों की वर्षा होगी।

(5) एकांत में कौन-कौन बैठे है?

प्रेमी और प्रेमिका।

(6) प्रेम-युग्मों को आपस में क्या देना है?

अपने में जो कुछ सुंदर है, उसे इन प्रेम युग्मों को देना है।

(7) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखे।

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में अग्रणी है। कामायनी, झरना, लहर आदि उनकी श्रेष्ठ काव्य रचनाएँ है। 'मधुऋतु' छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता है। इस कविता में वसंत ऋतु को कवि अपने प्रेमिका के रूप में खींचा है।

रात में अंधकार रूपी सागर को पार करके चंद्रमा की शीतल किरणें आएगी। अर्थात रात में चंद्रमा फैली जाएगी। अंतरीक्ष से प्रकृति के कण-कण में ओस की बूँदों की वर्षा करती है। इस तरह की एकांतता में वसंत और प्रकृति तीव्रानुराग में अपस में पूर्ण समर्पित होने लगते हैं। सृजन की इस एकांतता में कोई बाधा मत डालो और अपने में जो कुछ सुंदर है उन्हें इनको दे देने है।

प्रेमी-प्रेमिकाओं का मिलन, विरहावस्था रूपी अंधकार को दूर करके मिलन रूपी उन्माद रूपी प्रकाश फैलाता है।

DO NOT COPY

अनुवर्ती कार्य:

(1) जीवन-वृत्त पढ़ें।

नाम	: जयशंकर प्रसाद
जन्म	: 30 जनवरी 1889. वारणासी (उत्तर प्रदेश)
रचनाएँ	: कामायनी, आँसू, स्कंदगुप्त, आकाशदीप
विशेषताएँ	: प्रतिभाशाली रचनाकार साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखनी चलाई छायावादी कवि
देन	: काव्य में कल्पना का संचार करके कविता को आम धरातल से उठा दिया।
मृत्यु	: 14 जनवरी 1937

HSSLIVE.IN

जयशंकर प्रसाद के बारे में अनुच्छेद तैयार करें।

जयशंकर प्रसाद

प्रतिभाशाली रचनाकार श्री जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जमवरी 1889 को उत्तर प्रदेश के वारणासी में हुआ। वे छायावादी कवि थे। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। काव्य में कल्पना का संचार करके कविता को आम धरातल से उठाने में वे सफल हुए। कामायनी, आँसू, स्कंदगुप्त, आकाशदीप प्रमुख रचनाएँ है। उनकी मृत्यु 14 जनवरी 1937 में हुई।

(2) छायावादी कविता की विशेषताओं को ध्यान में रखकर मधुऋतु कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में अग्रणी है। कामायनी, झरना, लहर आदि उनकी श्रेष्ठ काव्य रचनाएँ है। 'मधुऋतु' छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता है। इस कविता में वसंत ऋतु को कवि अपने प्रेमिका के रूप में खींचा है।

कवि कहते हैं कि कवि के शून्य हृदय में पथ भूलकर आनेवाली 'वसंतकाल' के समान अचानक प्रेमिका आ गई। इस व्यथा साथिन केलिए कवि अपने मन में एक छोटी-सी कुटिया बना देना चाहता है।

प्रेम का वह नीड़ धरती और आकाश के बीच सबसे अलग होकर स्थित है। जो सूखे और फालतू अर्थात प्रणय विहीन व्यक्तियाँ को जंगल के स्थिर पतझड़ में भागना है।

कवि कहते हैं कि, वसंत की प्रेममयी वातावरण में आशा के नए-नए अंकुर फूटेगे और प्रेमी, पल्लव की तरह पुलकित हो जाएँगे। प्रेम एक उन्माद अवस्था है, और प्रेम का मधुर मोहक संसार किसी को बुरा नहीं लगेगा। मलयानिल की लहरें काँपते हुए आएँगी और कवि के मन के नयन रूपी कमलों को चुंबन करके जगाएँगी। कवि के छोटे संसार में पूरब दिशा से लाल कुसुम की तरह उषा खिलेगी। उषा की लाल होंठों से निकलने वाली लालिमा से दिन रंगीन बनेगा।

रात में अंधकार रूपी सागर को पार करके चंद्रमा की शीतल किरणें आएगी। अर्थात रात में चंद्रमा फैली जाएगी। अंतरीक्ष से प्रकृति के कण-कण में ओस की बूँदों की वर्षा करती है। इस तरह की एकांतता में वसंत और प्रकृति तीव्रानुराग में अपस में पूर्ण समर्पित होने लगते हैं। सृजन की इस एकांतता में कोई बाधा मत डालो और अपने में जो कुछ सुंदर है उन्हें इनको दे देने है।

छायावाद हिंदी कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धी है। प्रेम, प्रकृति-सौंदर्य, मानवीकरण, लाक्षणिकता, काल्पनिकता, कोमलकांत पदावली आदि छायावाद की खास विशेषताएँ है। प्रसाद जी की मधुऋतु में छायावाद की सारी विशेषताएँ समाहित है।